टिप्पणी

223hi10

10

आधुनिक भारत में धार्मिक सुधार आन्दोलन

आज हम बहुत भाग्यशाली हैं। हम विदेशी शासन से मुक्त हैं और कई अन्य कट्टरताओं से भी मुक्त हुए हैं जिन्हें हमारे पूर्वज झेलते रहे हैं। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय समाज जातिपाँति व भेदभाव से जकड़ा हुआ था, कट्टरपन्थी और कठोर था। इसमें कुछ ऐसी प्रथाएं अपनाई जा रही थीं जो मानवता की भावनाओं या मूल्यों पर आधारित नहीं थीं बल्कि केवल धर्म के नाम पर अनुपालित की जा रही थीं। अत: समाज में परिवर्तन आवश्यक था। जब अंग्रेज भारत में आए, तो उन्होंने अंग्रेजी भाषा और साथ ही कुछ नए विचारों का भी प्रचार किया। ये विचार थे स्वतन्त्रता के, सामाजिक और आर्थिक समानता के, मातृत्व के, प्रजातन्त्रवाद के और न्याय के जिनका भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। हमारे देश के सौभाग्य से यहाँ कुछ ऐसे प्रबुद्ध भारतीय थे जैसे राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती एवं कई अन्य जो इन कुरीतियों से लड़ने और समाज को सुधारने के लिए कटिबद्ध थे जिससे भारत भी पश्चिम का मुकाबला कर सके।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:–

- धार्मिक और सामाजिक सुधारों की कुछ समान विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे;
- धार्मिक सुधारों को लागू करने में राजा राम मोहन राय और उनके ब्रह्मसमाज की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रार्थना समाज को एक ऐसी संस्था के रूप में जान सकेंगे जिसने धार्मिक और सामाजिक सुधारों को क्रियान्वित किया;
- आर्यसमाज और इसके सामाजिक और धार्मिक सुधारों को लागू करने वालो की विचारधारा की व्याख्या कर सकेंगे;
- 19वीं शताब्दी में भारतीय जागृति हेतु रामकृष्ण मिशन के योगदान की समीक्षा कर सकेंगे;

- प्राचीन भारतीय धर्म को प्रोत्साहित करने में थियोसोफिकल सोसायटी द्वारा किए गए प्रयासों का मूल्यांकन कर सकेंगे; तथा
- मुसलमानों में सांस्कृतिक और शैक्षिक सुधार लाने में अलीगढ़ आन्दोलन के योगदान की समीक्षा कर सकेंगे;
- सिक्खों और पारसियों द्वारा समाज को प्रबुद्ध करने के लिए किए गए सुधारों की समीक्षा कर सकेंगे।

10.1 धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलनों की समान विशेषताएँ

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध से कई भारतीय और यूरोपीय विद्वानों ने प्राचीन भारत के इतिहास, दर्शन, विज्ञान, धर्म और साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ किया। भारत की अतीत की शानदार उपलब्धियों ने भारतीयों में अपनी सभ्यता के प्रति गर्व की भावना का विकास किया। इस ज्ञान से सुधारकों को अमानवीय प्रथाओं अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए धार्मिक और सामाजिक सुधार कार्य करने में सहायता प्राप्त हुई।

क्योंकि अब वे धार्मिक विश्वासों से परिचित हो चुके थे, अत: सामाजिक सुधार के अधिकांश आन्दोलन धार्मिक प्रकृति के थे। ये सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन सभी भारतीय समुदायों में प्रचलित हो गए। उन्होंने धार्मिक कट्टरता, अन्धविश्वासों और पुरोहित वर्ग के आधिपत्य का जम कर विरोध किया। उन्होंने जाति भेद और अस्पृश्ता, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बालविवाह, सामाजिक भेदभाव और निरक्षरता के विरूद्ध कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ सुधारकों का साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेज अधिकारी भी दे रहे थे और कुछ सुधारक अंग्रेजी सरकार द्वारा कुछ सुधार कार्यों के पक्ष में बनाए गए अधिनियमों का भी समर्थन कर रहे थे।

10.2 ब्रह्मसमाज और राजाराम मोहन राय

आज स्त्री और पुरुष कुछ अधिकारों और स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे हैं। पर क्या आप जानते हैं कि ये सब हमें कुछ सुधारकों के अनथक प्रयत्नों के द्वारा ही प्राप्त हुए हैं। इस अवधि के महान सुधारकों में राजाराम मोहन राय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने पूर्व और पश्चिम का एक सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया। एक महान साहित्यिक प्रतिभा से युक्त और भारतीय संस्कृति के विशेषज्ञ होते हुए भी उन्होंने ईसाई और इस्लाम धर्म का विशेष रूप से अध्ययन किया जिससे कि हम दोनों धर्मों को भलीभांति समझ सकें। वह कुछ प्रथाओं के कट्टर विरोधी थे जो उस समय धार्मिक स्वीकृति भी प्राप्त कर चुकी थी।

उनका प्रमुख ध्यान इस ओर था कि हिन्दू धर्म का मूर्ति पूजा, यज्ञादि कर्मकाण्ड और अन्य निरर्थक धार्मिक कृत्यों से कैसे पीछा छुड़ाया जाय। वे पुरोहित वर्ग को इन प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए दोषी ठहराते थे। उनकी राय थी कि सभी प्रमुख प्राचीन ग्रन्थ एकेश्वरवाद अर्थात् एक ब्रह्म की उपासना का उपदेश देते हैं। धार्मिक सुधारों के क्षेत्र में उनकी

टिप्पणी

सबसे बड़ी उपलब्धि थी 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना। ब्रह्म समाज सामाजिक सुधारों का एक महत्त्वपूर्ण संगठन था। ब्रह्म समाज ने मूर्तिपूजा का विरोध किया और निरर्थक रीतिरिवाजों की निन्दा की। इस समाज ने अपने सदस्यों को किसी भी धर्म का विरोध करने के लिए मना किया। इसके विपरीत यह सभी धर्मों की एकता में विश्वास करता था। राजा राममोहन राय विश्वास करते थे कि मनुष्य को सत्य और परोपकार का मार्ग अपनाना चाहिए और झूठ और अन्धविश्वासों पर आधारित प्रथाओं को छोड़ देना चाहिए।

राजा राम मोहनराय केवल धार्मिक सुधारक ही नहीं थे बल्कि सामाजिक सुधारक भी थे। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी 1929 ई. में सती प्रथा को दूर करवाना। राजा राममोहनराय ने अनुभव किया कि हिन्दु महिलाओं की समाज में बहुत ही निम्न स्थिति थी। अतः वे महिलाओं के अधिकारों के प्रबल समर्थक के रूप में कार्य करने लगे। वे कई वर्षों तक सती प्रथा को बन्द करने के लिए कठिन परिश्रम करते रहे। 1818 ई. के प्रारम्भ में वह 'सती' विषय पर जनता में जागृति लाने के लिए निकल पड़े। एक ओर वे प्राचीन पवित्र ग्रन्थों से उद्धरणों द्वारा ये सिद्ध करने पर जुटे हुए थे कि हिन्दु धर्म सती प्रथा के विरूद्ध है और दूसरी ओर वे लोगों से दया, तर्क और मानवता के आधार पर आग्रह करते थे। उन्होंने कलकत्ता में विधवाओं के रिश्तेदारों को उन्हें स्वयं को जलाने की योजना के विरूद्ध समझाने के लिए जलते हुए श्मशान घाटों का भी दौरा किया। उनके सती प्रथा के विरूद्ध अभियान ने कट्टरपंथी हिन्दुओं को नाराज कर दिया जो हर प्रकार से उन पर आक्रमण करने लगे।

राजा राममोहन राय भारतीय समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था के भी सख्त विरोधी थे। हृदय की गहराइयों से एक मानवतावादी और प्रजातान्त्रिक विचारों के होने के कारण उन्होंने जाति व्यवस्था के विरोध में लिखना और भाषण देना प्रारम्भ किया। एक अन्य महत्त्वपूर्ण विषय जो उनकी चिन्ता का विषय बना हुआ था, वह था हिन्दु बहुदेवतावाद। और उपनिषदों के अध्ययन से उन्हें यह कहने का बल मिला कि प्राचीन हिन्दु धर्म एकेश्वरवाद में विश्वास करता है इसलिए वे बहुदेवतावाद और मूर्तिपूजा के विरूद्ध हैं। वास्तव में वह कोई नया धर्म नहीं प्रारम्भ करना चाहते थे बल्कि वैदिक धर्म को रूढ़िवादी अज्ञानतापूर्ण अन्धविश्वासों से मुक्त करवाना चाहते थे। उन्होंने घोषणा की कि सभी धर्मों और सम्पूर्ण मानवता के लिए भी एक ही भगवान है। उन्होंने बंगाली और अंग्रेजी में लिखा। वह अंग्रेजी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। वह फारसी भाषा में भी प्रवीण थे और प्रारम्भ में उनके कुछ बहुत अधिक उदार और तर्कपूर्ण विचार उस भाषा में ही प्रकाशित हुए।

उन्होंने बहुविवाह (एक व्यक्ति का कई पत्नियाँ रखना) तथा बालविवाह का भी विरोध किया। वे महिलाओं की शिक्षा पर भी बल देते थे और उनके जायदाद में उत्तराधिकार का भी समर्थन करते थे। वे महिलाओं की पराधीनता के भी सख्त विरोधी थे और इस बात का भी पूर्ण खण्डन करते थे कि स्त्रियाँ बुद्धि में या नैतिकता में किसी भी प्रकार से कम हैं। उन्होंने विधवा विवाह का भी पूर्ण समर्थन किया।

अपने विचारों को क्रियान्वित करने के लिए राजा राम मोहन राय ने 1828 ई. में ब्रह्म सभा की की नींव डाली जो बाद में ब्रह्म समाज के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके द्वार सभी के लिए खुले थे चाहे वे किसी भी वर्ण के, विश्वास के, जाति के, राष्ट्रीयता या धर्म के क्यों न हो। वे मानवता के सम्मान पर बल देते थे, मूर्ति पूजा का विरोध करते थे और सती प्रथा जैसी

टिप्पणी

कुरीतियों का जम कर विरोध करते थे। यह कोई अलग धर्म का प्रचार करने के लिए नहीं बनी थी बल्कि एक ऐसा स्थान था जहाँ एक ईश्वर में विश्वास रखने वाले लोग मिल सकें और प्रार्थना कर सकें। यहाँ कोई मूर्ति नहीं होती थी और न ही किसी प्रकार के यज्ञ या पूजा पाठ का विधान था।

द्वारकानाथ टैगोर के सुपुत्र देवेन्द्रनाथ टैगोर (1817-1905) (ब्रह्मसमाज के संस्थापाक सदस्य) ने राममोहन राय के बाद ब्रह्मसमाज का नेतृत्व संभाला और राजा राम मोहन राय के विचारों का समर्थन करते हुए ब्रह्मसमाज में नवजीवन का संचार किया। केशवचन्द्र सेन (1838-1884) ने टैगोर से समाज का नेतृत्व प्राप्त किया। ब्रह्मसमाज के आदर्श थे-व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय एकता, दृढ़ विश्वास तथा सहयोग और सभी सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक संबंधों का लोकतान्त्रीकरण। इस प्रकार यह पहली सुसंगठित संस्था बन गई जो राष्ट्रीय जागृति को प्रोत्साहित कर रही थी और भारतीयों के लिए एक नये युग का सूत्रपात कर रही थी। लेकिन फिर आन्तरिक मतभेद के कारण यह संस्था कमजोर पड़ गई और इसका प्रभाव केवल शहर में रहने वाले पढ़ेलिखे वर्ग तक ही सीमित रहा परन्तु इसने बंगाल के बौद्धिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा।

10.3 प्रार्थना समाज और राणाडे

प्रार्थना समाज की स्थापना सन् 1876 ई. में बम्बई में डा. आत्माराम पाण्डुरंग (1825 ई. - 2898 ई.) द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य था विवेकपूर्ण पूजा आराधना और समाज सुधार का कार्य करना इसके दो प्रमुख सदस्य थे श्री आर सी मजुमदार, और न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द राणाडे। इन्होंने अन्तर्जातीय भोज, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं तथा दलित वर्ग के उद्धार जैसे समाज सुधार के कार्यों में अपना जीवन लगा दिया।

महादेव गोविन्द राणाडे (1842 ई. -1901 ई.) ने अपना समस्त जीवन प्रार्थना समाज को ही समर्पित कर दिया था। वे विधवा पुनर्विवाह ऐसोसिएशन (1861) तथा दक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। उन्होंने पूना सार्वजनिक सभा को भी स्थापित किया। राणाडे के लिए धर्म सुधार और समाज सुधार में कोई अन्तर नहीं था। उनका यह भी विश्वास था कि यदि धार्मिक विचार कट्टरपंथी होंगे तो सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में सफलता नहीं मिल सकेगी।

यद्यपि प्रार्थना समाज पर ब्रह्मसमाज के सिद्धान्तों का गहरा प्रभाव था फिर भी इसने मूर्तिपूजा और जातिप्रथा का इतना गहरा विरोध नहीं किया। ये वेद को भी अन्तिम वाक्य नहीं समझते थे, ये पुनर्जन्म और अवतारवाद के सिद्धांत को भी स्वीकार नहीं करते थे। इसका एकमात्र केन्द्रीय विचार था 'एकेश्वरवाद में विश्वास करना।'

10.4 डेरोजियो और युवा बंगाल आन्दोलन

हेनरी लुई विवियन डेरोजियो ने कलकत्ता के हिन्दू कालेज में एक प्राध्यापक के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया। वह स्काटलैंड से कलकत्ते में घड़िया बेचने के लिए आए थे लेकिन बाद

टिप्पणी

में उन्होंने बंगाल में आधुनिक शिक्षा के प्रसार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। डेरोजियो ने अपने अध्यापन के माध्यम से क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया और उन्होंने साहित्य दर्शन, इतिहास और विज्ञान पर वाद-विवाद एवं चर्चा करने के लिए गए संघ की भी स्थापना की। उन्होंने अपने अनुयायियों और विद्यार्थियों को सभी सत्ताओं को चुनौती देने के लिए प्रेरणा दी। डेरोजियो और उसके प्रसिद्ध अनुयायी जिन्हें लोग डोरोजियन और युवा बंगाल के नाम से बुलाते थे, आग उगलने वाले देशभक्त माने जाते थे। वे फ्रेंच विद्रोह (1789 ई.) के आदर्शों और ब्रिटेन के उदार विचारों का सम्मान करते थे। डेरोजियो मात्र 22 वर्ष की उम्र में हैजे से मृत्यु को प्राप्त हुए। डेरोजियो की सेवामुक्ति और अचानक देहान्त के बाद भी युवा बंगाल आन्दोलन जारी रहा। नेतृत्व का अभाव हो जाने पर भी इस वर्ग के सदस्यों ने अपने क्रान्तिकारी विचारों का अध्यापन और पत्रकारिता के माध्यम से जारी रखा।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

बंगाल के एक अन्य प्रसिद्ध सुधारक थे ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (1820 ई. - 1891 ई.) मूर्धन्य विद्वान होते हुए उन्होंने महिलाओं की मुक्ति के विषय में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। उन्हीं के ही अशक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप विधवाओं के विवाह के मार्ग में आने वाली कठिनाइयाँ 1856 के एक कानून के द्वारा दूर हो सकीं। उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई और स्वयं लड़कियों के कई स्कूल खोले और खुलवाए। विद्यासागर ने धार्मिक प्रश्नों के विषय में अधिक चिन्ता नहीं दिखाई। फिर भी वे उन लोगों के विरुद्ध थे जो धर्म के नाम पर सुधारों का विरोध करते थे।

10.5 सुधार आन्दोलनों का पश्चिमी और दक्षिणी भारत में प्रसार

बंगाल के बाद जो सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र जहाँ सुधार आन्दोलन फैले वह था पश्चिमी भारत। **बाल शास्त्री बाम्बेकर** बम्बई में प्रारम्भिक सुधारकों में से एक थे। उन्होंने ब्राह्मणों की रूढ़िवादिता पर आक्रमण किया और हिन्दु धर्म का सुधार करने का प्रयत्न किया।

1849 में **परमहंस मण्डली** पूना, सतारा और महाराष्ट्र के अन्य नगरों में स्थापित की गई। इनके अनुयायी एक ईश्वर में विश्वास करते थे और जाति प्रथा का विरोध करते थे। इनकी बैठकों में इनके सदस्य निम्न जाति के लोगों द्वारा बनाया हुआ भोजन करते थे। वे महिलाओं की शिक्षा का समर्थन करते थे और विधवा विवाह के पक्ष में थे। **महादेव राणाडे** सोचते थे कि सामाजिक सुधारों के बिना राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी किसी प्रकार की उन्नति कर पाना सम्भव नहीं है। वह हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे।

पश्चिमी भारत के दो अन्य महान सुधारक थे **गोपाल हरि देशमुख लोकहितवादी,** और **ज्योतिराव गोविन्दराव फुले** जिन्हें **ज्योतिबा** फूले के नाम से जाना जाता है। उन्होंने नारियों के उद्धार के लिए कार्य किये, महिलाओं और दलितों के हितों का बीड़ा उठाया। ज्योतिबा फूले ने अपनी पत्नी के साथ 1857 ई. में पूना में एक बालिका विद्यालय खोला। उन्होंने

टिप्पणी

दलितों के बच्चों के लिए भी एक स्कूल प्रारम्भ किया। ज्योतिबा फुले महाराष्ट्र में विधवा विवाह आन्दोलन के अग्रणी सेनानी बने। उन्होंने ब्राह्मणों के आधिपत्य को चुनौती दी और जनसामान्य को संगठित करने का प्रयास किया। उन्होंने किसानों के हितों की भी वकालत की और महाराष्ट्र में ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सक्रिय योगदान किया। ज्योतिबा को उनके **दीन दु:खियों** के उद्धार कार्य के लिए 'महात्मा' की उपाधि दी गई। 1873 ई. में उन्होंने अपने आन्दोलन को सशक्त और लोकप्रिय बनाने के लिए 'सत्यशोधक संस्था' की स्थापना की।

देश के दक्षिणी भाग में **कन्दुकुरी वीरेसलिंगम** (1848 ई. - 1919 ई.) ने आन्ध्र में विधवा विवाह और बालिकाओं की शिक्षा के समर्थन में आन्दोलन का नेतृत्व किया। मद्रास में 1864 ई. में स्थापित 'वेद समाज' ने जातिगत भेदभाव का खण्डन किया और विधवा विवाह तथा नारी शिक्षा के लिए सक्रिय योगदान किया। इस समाज ने रूढ़िवादी हिन्दूधर्म के अन्ध विश्वासों और रीतिरिवाजों की निन्दा की और एक सर्वोच्च परमात्मा की शक्ति में विश्वास का प्रचार किया। चेम्बेटी श्रीधरालु नायडू वेद समाज के सबसे लोकप्रिय नेता थे। उन्होंने 'वेद समाज' के ग्रन्थों को तमिल और तेलुगु में अनूदित किया।

तथाकथित दलितवर्ग और भारतीय समाज के उत्पीड़ित वर्गों के उत्थान के लिए विशेषरूप से प्रयत्नशील एक महत्त्वपूर्ण आन्दोलन **नारायण गुरू द्वारा** केरल में (1854 ई.-1928 ई.) में प्रारम्भ किया गया। 1903 में उन्होंने 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम्' नामक संस्था सामाजिक सुधार कार्य को आगे बढ़ाने के लिए स्थापित की। श्री नारायण गुरू जाति के आधार पर भेदभाव को निरर्थक समझते थे और वे अपने प्रसिद्ध विचार-एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर' का प्रतिपादन करते थे।

पाठगत प्रश्न 10.1

1. उन परिस्थितियों का वर्णन कीजिए जिनके कारण ब्रह्मसमाज की स्थापना हुई?

   .....

2. ब्रह्मसमाज के नियम क्या थे?

   .....

3. प्रार्थना समाज ने सामाजिक विषमताओं को दूर करने में कैसे सहायता की?

   .....

4. एम जी राणाडे कौन थे?

   .....

10.6 स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824 ई. - 1883 ई.) और आर्यसमाज

आप किसी दिन आर्य समाज के सत्संग में जाकर देखिए। आप वहाँ अनेक बहनों को सत्संग में भाग लेते देखेंगे। वे यज्ञ करती हुई और वेदपाठ करती हुई भी दिखाई देंगी। यह मूलशंकर

टिप्पणी

के मौलिक योगदान का ही कमाल है जो गुजरात से धार्मिक सुधार आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि थे। बाद में वे दयानन्द सरस्वती (1824 ई. - 1883 ई.) जाने गए। उन्होंने 1875 ई. में आर्यसमाज की स्थाना की। उत्तरी भारत में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सबसे प्रभावशाली धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन का नेतृत्व किया। उनका मानना था कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेद रूपी ज्ञान मानव मात्र के लिए दिया और आधुनिक विज्ञान के सभी मूल तत्त्व वेदों में खोजे जा सकते हैं। वे मूर्त्ति पूजा के विरोधी थे, कर्मकाण्ड और पुरोहितवाद, विशेष रूप से प्रचलित जातिपांति के दुर्व्यवहार और ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित हिन्दूध र्म की कट्टरता की निन्दा करते थे। उन्होंने पश्चिमी विज्ञान के अध्ययन का समर्थन किया। इन्हीं सिद्धान्तों के प्रचार हेतु उन्होंने पूरे देश में भ्रमण किया और 1875 ई. में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की।

उनका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' है। उनके लेख और प्रवचन हिन्दी भाषा में होने के कारण सम्पूर्ण उत्तरी भारत में प्रचलित हो गए। आर्यसमाज के सदस्य बालविवाह का विरोध करते थे और विधवा विवाह का समर्थन। यह आर्य समाज उत्तर प्रदेश, राजस्थान और गुजरात में तीव्रता से लोकप्रिय होता चला गया।

समूचे उत्तरी भारत में शिक्षा के प्रचार और प्रसार कार्य के लिए बालकों और बालिकाओं के विद्यालयों और महाविद्यालयों का जाल बिछा दिया गया। लाहौर दयानन्द ऐग्लो-वैदिक स्कूल शीघ्र ही पंजाब के एक प्रसिद्ध कालेज के रूप में विकसित हुआ। इन विद्यालयों में आधुनिक विधियों से हिन्दी और अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाई करवाई जाती थी। लाला हंसराज ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1902 में स्वामीश्रद्धानन्द ने हरिद्वार में शिक्षा के पारम्परिक शास्त्रों के अध्ययन के लिए गुरूकुल की स्थापना की। यह प्राचीन आश्रमों की परिपाटी पर बनाया गया था।

आर्यसमाज ने भारत की जनता में स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना को भरने का प्रयत्न किया। इससे राष्ट्रीयता का विकास हुआ। इसी के साथ-साथ इसका एक प्रमुख उद्देश्य था हिन्दूओं के अन्य धर्मों में परिवर्तन को रोकना। जो हिन्दू मुस्लिम या ईसाई बन गए थे उनको वापिस हिन्दू धर्म में लाने के लिए शुद्धि संस्कार का भी विधान दिया गया।

10.7 रामकृष्ण मिशन और स्वामी विवेकानन्द

गदाधर चट्टोपाध्याय (1836 ई. - 1886 ई.) एक निर्धन ब्राह्मण पुजारी थे, जो बाद में रामकृष्ण परमहंस के नाम से जाने गये। उनकी शिक्षा प्रारम्भिक स्तर से आगे न बढ़ पाई। उन्होंने दर्शन तथा शास्त्रों में कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की। उन्होंने अपना जीवन ईश्वर को समर्पित कर दिया था। उनका विश्वास था कि परमात्मा तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं और मानव सेवा ही ईश्वर की सेवा है, क्योंकि मानव ईश्वर का ही मूर्त रूप है। उनकी शिक्षाओं में साम्प्रदायिकता का कोई स्थान न था। मानवता में ही दिव्यता दिखाई देती थी और मानवता की सेवा को ही वे मोक्ष का साधन मानते थे।

नरेन्द्र नाथ दत्त (1863 ई. - 1902 ई.) रामकृष्ण परमहंस के सबसे प्रिय शिष्य थे जो बाद में **विवेकानन्द** के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने गुरू रामकृष्ण के सन्देश को पूरे संसार में, विशेष रूप से, अमेरिका और यूरोप में प्रसारित करने का प्रयत्न किया। विवेकानन्द स्वयं भारत की आध्यात्मिक विरासत पर गर्व का अनुभव करते थे परन्तु उनका विश्वास था कि कोई भी व्यक्ति या राष्ट्र दूसरों की संगति के बिना अलग थलग रह कर जीवित नहीं रह सकता। वे जाति प्रथा, कठोर कर्मकाण्ड तथा सदियों पुराने अन्धविश्वासों के सख्त विरोधी थे और स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र चिन्तन और समानता के पक्षपाती थे।

विवेकानन्द हृदय की गहराइयों से सच्चे देशभक्त थे। उन्हें भारतीय संस्कृति के विकास में अगाध विश्वास था। भारतीय संस्कृति के महत्त्व और गौरव को पुनर्जीवित करने का अदम्य उत्साह था। उन्होंने भारतीय संस्कृति के उत्थान में हर सम्भव प्रकार से अपना योगदान किया।

स्वामी विवेकानन्द ने सभी धर्मों में एकता के रामकृष्ण जी की शिक्षा का प्रचार करने में स्वयं को लगा दिया। उन्होंने वेदान्त दर्शन का प्रचार किया जिसे वे सबसे अधिक विवेकपूर्ण दर्शन मानते थे।

जनसाधारण के उत्थान पर अत्यधिक बल देना ही विवेकानन्द के सामाजिक दर्शन का मुख्य लक्षण था। उनके अनुसार निर्धन और दलित लोगों की सेवा ही सर्वोत्तम धर्म है। इसी सेवा को संगठित करने के लिए उन्होंने 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। आज तक इस मिशन ने राष्ट्रीय आपदाओं के समय समाज सेवा जैसे बाढ़, अकाल और महामारी के समय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इसके द्वारा अनेक विद्यालय, हस्पताल और अनाथालय चलाए जा रहे हैं।

1893 ई. में उन्होंने अमेरिका में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन (धर्मों की संसद) में भाग लिया। उन्होंने सिद्ध किया कि वेदान्त सभी लोगों से ही सम्बद्ध है न कि केवल हिन्दुओं से उनके भाषण का अन्य देशों के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा, और इस तरह विश्व की दृष्टि में भारतीय संस्कृति के महत्व और गौरव में भी आशातीत वृद्धि हुई। यद्यपि उनका मिशन केवल धार्मिक प्रकृति का ही था लेकिन स्वामी विवेकानन्द राष्ट्रीय जीवन के सभी पक्षों में सुधार करने में रूचि रखते थे। वह लोगों की निर्धनता और दयनीय दशा को सुधारने के लिए बहुत चिन्तित रहते थे और कहते थे कि जन साधारण की परवाह न करना एक पाप है। वह स्पष्ट रूप से कहते थे- हम स्वयं अपनी दु:खी और गिरी हुई स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं। ''वे लोगों का अपने मोक्ष के लिए स्वयं प्रयत्नशील होने की सलाह देते थे। इसी उद्देश्य से इस कार्य के लिए पूरी निष्ठा से जुड़े हुए कार्यकर्ताओं की टोलियों को रामकृष्ण मिशन की ओर से प्रशिक्षित किया गया। इस प्रकार विवेकानन्द ने सामाजिक अच्छाई या समाज सेवा पर बल दिया।

पाठगत प्रश्न 10.2

1. आर्य समाज की स्थापना किसने की?

.....

टिप्पणी

2. पहला दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज कहाँ स्थापित किया गया था?

.....

3. गदाधर चट्टोपाध्याय के अनुसार आप मोक्ष कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

.....

4. स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम क्या था?

.....

5. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार सर्वोच्च धर्म कौन सा था?

.....

10.8 थियोसोफिकल सोसाइटी और एनी बेसेन्ट

आधुनिक भारतीय संस्कृति समाज, और धर्म के इतिहास में थियोसोफिकल सोसायटी ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसकी स्थापना अमेरिका में एक रशियन अध्यात्मज्ञानी मैडम एच.पी ब्लेवेत्स्की और एक अमेरिकन कर्नल एच एस. आलकॉट ने 1875 ई. में की। इसका मुख्य उद्देश्य था प्राचीन धर्म, दर्शन और विज्ञान का अध्ययन, मानव में अन्तर्निहित शक्तियों का विकास और एक सर्व व्यापी विश्वबन्धुत्व की भावना को प्रोत्साहित करना।

भारत में इस सोसायटी का आरम्भ सन 1879 ई. में किया गया और इसका मुख्यालय 1886 ई. में मद्रास के समीप अडयार में स्थापित किया गया था। 1893 ई. में एनी बेसेन्ट के नेतृत्व में इसका प्रभाव बढ़ता गया। एनी बेसेन्ट ने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में अहम भूमिका का निर्वाह किया था। उन्होंने तथा उनके साथियों ने हिन्दुओं के प्राचीन धर्म, जोरास्ट्रियनिज्म और बौद्ध धर्म के पुनरोद्धार और विकास के कार्य में अपने आप को समर्पित कर दिया। उन्होंने आत्मा के शरीर बदलने (पुनर्जन्म) के सिद्धान्त को भी स्वीकार किया। उन्होंने साथ ही सार्वभौमिक भ्रातृत्व भावना पर भी बल दिया। उन्होंने शिक्षित भारतीयों को अपने देश के प्रति गर्व अनुभव करने को प्रोत्साहित किया। एनी बेसेन्ट का आन्दोलन ऐसे पाश्चात्य देशों के लोगों द्वारा चलाया जा रहा था जो भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक परम्पराओं को बहुत महत्त्व देते थे। इससे भारतीयों को पुनः आत्म विश्वास प्राप्त करने में सहायता मिली।

वस्तुतः एनी बेसेन्ट द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण थे। उन्होंने बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू महाविद्यालय की स्थापना की जिसको बाद में मदन मोहन मालवीय जी को सौंप दिया। मालवीय जी ने इस महाविद्यालय को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया। यद्यपि थियोसोफिकल सोसायटी बहुत अधिक जन साधारण में लोकप्रिय नहीं हो पाई, परन्तु एनी बेसेन्ट के नेतृत्व में भारतीयों को जगाने के लिए जो कार्य किया गया वह उल्लेखनीय था। उन्होंने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने के लिए बहुत कार्य किया। थियोसोफिकल सोसायटी का अड्यार में मुख्यालय ज्ञान का एक प्रमुख केन्द्र बन गया जिसके पुस्तकालय में संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध थे।

टिप्पणी

इस सोसायटी ने अस्पृश्यता और महिलाओं के उद्धार के लिए बहुत संघर्ष किया। एनी बेसन्ट ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज की सेवा में लगा दिया। उन्होंने अपने मिशन का इन शब्दों में वर्णन किया–''भारत के प्राचीन धर्मों को पुनर्जीवित करना और सुदृढ़ करना ही प्रथम उद्देश्य है। इससे नया आत्म सम्मान अतीत के प्रति गौरव, और भविष्य में विश्वास उत्पन्न होगा जिसके फलस्वरूप देश प्रेम की भावना विकसित होगी और राष्ट्र के पुनर्निर्माण को बल मिलेगा।''

भारत में एनी बेसेंट की अनेक सफलताओं में से एक सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना है। एनी बेसेंट ने भारत को अपना स्थायी निवास बनाया और भारतीय राजनीति में सक्रिय भाग लिया। वे कहती थीं''– भारत की कई अन्य आवश्यकताओं में से एक आवश्यकता है– राष्ट्रीय भावना का विकास और एक ऐसी शिक्षा जो भारतीय विचारों पर आधारित हो और पश्चिमी संस्कृति और विचारों से मुक्त होनी चाहिए।'' उन्होंने सदा भारतीयों के लिए स्वशासन (Home rule) का समर्थन किया और स्वशासन के संदेश के प्रसार के लिए होमरूल लीग की स्थापना की। पूरे भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी की शाखाएँ स्थापित की गई। उन्होंने एक पत्रिका थियोसोफिस्ट भी निकाली जिसका व्यापक प्रसार था। सोसाईटी ने विशेषत: दक्षिणी भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधारों में बहुत योगदान किया। इसके अधिकांश कार्य श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा ही प्रभावित थे।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. थियोसोफिकल सोसाईटी कहाँ स्थापित की गई थी?

   .....

2. थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना किसने की?

   .....

3. भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्यालय कहा था?

   .....

4. सन् 1916 ई. में होमरूल लीग किसने स्थापित की?

   .....

10.9 अलीगढ़ आन्दोलन और सैयद अहमद खाँ

अभी आपने हिन्दूधर्म की प्रथाओं और सामाजिक संस्थाओं में सुधार के विषय में पढ़ा। ऐसा ही एक सुधारवादी आन्दोलन इस्लाम धर्म में भी शुरू हुआ था। उच्च वर्गीय मुसलमान पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के सम्पर्क में आने से बचते रहे और सन 1857 ई. के विद्रोह के बाद ही उनमें धार्मिक सुधार के आधुनिक विचार पनपने प्रारम्भ हुए। इस दिशा में नवाब अब्दुल लतीफ (1828-1893) द्वारा कलकत्ता में 1863 ई. में स्थापित मुहम्मदन लिटरेरी

टिप्पणी

सोसायटी के बाद ही हुआ। इस सोसाइटी ने आधुनिक विचारों की रोशनी में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों पर विचार विमर्श को प्रोत्साहन दिया और साथ ही उच्च और मध्य वर्ग के मुसलमानों को पश्चिमी शिक्षा (अंग्रेजी शिक्षा) अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मुस्लिम जनता पर चिश्ती सूफी सन्तों के आन्दोलनों का भी प्रभाव पड़ा जिन्होंने न केवल परमात्मा को समर्पण कर देने की शिक्षा दी अपितु संतों की भी पूजा को भी प्रोत्साहित किया। एक अन्य आंदोलन दिल्ली में शाह वली उल्लाह से संबंधित है, जिन्होंने कट्टर धार्मिक प्रथाओं का विरोध किया और शिया सम्प्रदाय को तथा एकेश्वरवाद को पुनर्जीवित किया। लखनऊ में फिरंगीमहल की दार्शनिक और ज्ञानमयी परम्परा को नये शैक्षिक पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया और सम्पूर्ण भारत में 18वीं और 19वीं शताब्दी में इसका प्रचार भी किया गया।

मुस्लिम सुधारकों में सबसे ज्यादा उल्लेखनीय नाम उत्तर प्रदेश में रायबरेली के सैयद अहमद का था। उन्होंने बुनकरी उद्योग नगरी इलाहाबाद और पटना में उद्योग की गिरती स्थिति के कारण मुस्लिम कलाकारों को आकर्षित किया और उन्हें सामाजिक अस्थिरता के वातावरण में एक दृढ़ विश्वास के साथ सम्मान प्राप्त करने की सलाह दी। उन्होंने अनुभव किया कि जब तक मुस्लिम ब्रिटिश राज्य के परिवर्तित वातावरण के अनुसार अपने को न ढालेंगे, तब तक वे सम्मान और सम्पन्नता के नये अवसरों से वंचित ही रहेंगे। वे आधुनिक वैज्ञानिक विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे और सारे जीवन इस्लाम के साथ उनका सामंजस्य स्थापित करने के लिए काम करते रहे। उन्होंने कुरान की व्याख्या बुद्धिवाद और विज्ञान की रोशनी में की। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे आलोचनात्मक दृष्टिकोण और विचारों की स्वतन्त्रता को अपनाएँ। उन्होंने धर्मान्धता, संकीर्णता और अलगथलग रहने की प्रवृत्ति के विरूद्ध भी लोगों को सावधान किया। उन्होंने लोगों को उदारवृत्ति वाला और सहनशील बनने का उपदेश दिया। 1883 ई. में उन्होंने कहा ''अब हम दोनो ही (हिन्दू और मुस्लिम) भारत की हवा में ही सांस लेते हैं, गंगा और यमुना का पवित्र जल पीते हैं, और यहीं की पैदावार खाकर जीवित है। हम एक राष्ट्र हैं और देश की प्रगति और भलाई हमारी एकता, पारस्परिक सहानुभूति और प्रेम पर निर्भर है जबकि पारस्परिक असहमति जिद और विरोध तथा पारस्परिक दुर्भावनाएँ निश्चय ही हमारा सर्वनाश कर देंगी।''

सैयद अहमद खां का सही विश्वास था कि अकेलेपन की प्रवृत्ति मुसलमानों को बर्बाद कर देगी और इसको रोकने के लिए उन्होंने बाहरी दुनिया की सांस्कृतिक शक्तियों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने ब्रिटिश शासकों की मुस्लिमों के प्रति दुर्भावना को भी दूर करने का प्रयत्न किया जिन्हें वे अपना असली शत्रु समझते थे।

उनका विश्वास था कि मुस्लिमों का धार्मिक और सामाजिक जीवन आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान और संस्कृति की सहायता से सुधारा जा सकता है। इसलिए आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देना उनका पहला कार्य था। एक सरकारी अधिकारी होने के कारण उन्होंने कई स्थानों पर विद्यालय खोले। उन्होंने कई पश्चिमी पुस्तकों का उर्दु में अनुवाद करवाया। उन्होंने अलीगढ़ में मुहम्मदन ऐंग्लो-ओरियन्टल कालेज की 1875 ई. में स्थापना की। यह कालेज पाश्चात्य विज्ञानों और संस्कृति का प्रचार करने के लिए बनाया गया था। बाद में यही कालेज अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के नाम से विकसित हुआ।

टिप्पणी

सैयद अहमद खाँ द्वारा मुसलमानों के बीच शुरू किया गया उदार सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलन अलीगढ़ आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि यह आन्दोलन अलीगढ़ से ही प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन का केन्द्र एंग्लो-ओरियन्टल कालेज ही था। यह आन्दोलन मुस्लिमों में आधुनिक शिक्षा के प्रसार हेतु चलाया गया था यद्यपि इसका उद्देश्य इस्लाम से नाता तोड़ना कतई भी न था। यह भारतीय मुस्लिमों के लिए एक केन्द्रीय शैक्षिक संस्था बन गया था। इसके बाद मुस्लिमों में जो भी जागृति आई, वह सब अलीगढ़ आन्दोलन के ही कारण थी, देश के विभिन्न भागों में बिखरी हुई मुस्लिम जनता के लिए एक केन्द्रीय स्थल प्रदान किया। इसने उन सब के विचारों को एक सामान्य भावस्थल प्रदान किया और एक समान भाषा उर्दु प्रदान की। उर्दू में ग्रन्थों को सम्पादित करने के लिए एक मुस्लिम प्रेस भी विकसित किया गया। सैयद अहमद के प्रयत्नों से सामाजिक वातावरण में भी इसी के साथ विस्तार हुआ। उन्होंने सामाजिक सुधारों के लिए भी कार्य किया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया और पर्दा प्रथा के बहिष्कार पर भी बल दिया। वह बहुविवाह के भी विरूद्ध थे।

इसी के साथ अनेक अन्य सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन भी हुए जिन्होंने किसी न किसी रूप में मुस्लिम जनता में राष्ट्रीय जागृति लाने का प्रयत्न किया। मिर्जा गुलाम अहमद ने 1899 ई. में अहमदिया आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश में अनेक विद्यालय और महाविद्यालय खोले गए जो आधुनिक शिक्षा देते थे। धर्म के क्षेत्र में भी इस आन्दोलन के अनुयायी इस्लाम की सार्वभौमिक और मानवतावादी प्रकृति पर बल देते थे। वे हिन्दू और मुस्लिम एकता के भी पक्षपाती थे।

आधुनिक भारत के महान कवियों में से एक मुहम्मद इकबाल (1876 ई. - 1938 ई.) ने भी अपनी कविता के माध्यम से मुस्लिम युवा पीढ़ी और हिन्दुओं के दार्शनिक और धार्मिक दृष्टिकोण को अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने ऐसा गतिशील दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया जो पूरे विश्व को बदल कर रख सकता है। वह मूलतः एक मानवतावादी थे।

10.10 पारसियों में सुधार आन्दोलन

पारसियों में धार्मिक सुधार 19वीं शताब्दी के मध्य मुम्बई में प्रारम्भ हुए। 1851 ई. में रहनुमाई मजदायसन सभा अर्थात धार्मिक सुधार संघ की स्थापना नारोजी फरदौनजी, दादाभाई नरोजी, एस एस बंगाली तथा अन्यों द्वारा की गई। उन्होंने रस्त गुफ्तार नामक एक जर्नल भी पारसियों में सामाजिक और धार्मिक सुधार के लिए प्रारम्भ किया। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में गहरी रूढ़िवादिता के विरूद्ध प्रचार किया और लड़कियों की शिक्षा, विवाह और सामान्य रूप से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए पारसी सामाजिक रीतिरिवाजों के आधुनिकीकरण का कार्य आरम्भ किया। समय के साथ-साथ, सामाजिक दृष्टि से पारसी भारतीय समाज का सबसे अधिक पश्चिमी सभ्यता में रंगा हुआ वर्ग बन गए।

10.11 सिखों में धार्मिक सुधार

सिखों में धार्मिक सुधारों का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के अन्त में अमृतसर में खालसा कालेज की स्थापना से हुआ। सिंह सभाओं के प्रयत्नों से (1870 ई.) और ब्रिटिश सहायता से अमृतसर में 1892 ई. में खालसा कालेज की स्थापना हुई। इसी प्रकार के प्रयत्नों से गुरूमुखी भाषा, सिख शिक्षाओं और पंजाबी साहित्य का विकास किया।

टिप्पणी

1920 ई. के बाद, सिखों में जोश आया जब पंजाब अकाली आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। अकालियों का मुख्य उद्देश्य था गुरुद्वारों और सिख संस्थाओं के प्रबन्धान में सुधार करना। ये सब पुरोहितो/महन्तों के अधीन थे जो उन्हें अपनी व्यक्तिगत जागीर समझते थे। 1925 में एक कानून पास हुआ जिसने गुरूद्वारों के प्रबन्ध का अधिकार शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक समिति को सौंप दिया।

10.12 सुधार आन्दोलनों का प्रभाव

अंग्रेज समाज के रूढ़िवादी उच्च वर्ग को प्रसन्न करना चाहते थे। परिणामत: केवल दो ही आवश्यक कानून बन पाए। महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए भी कुछ कानूनी कदम उठाए गए। उदाहरणतया सती प्रथा को 1829 ई. में गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। भ्रूण हत्या भी गैर कानूनी घोषित कर दी गई। 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह का कानून भी पास हुआ। 1860 ई. में पास किए गए एक कानून के द्वारा लड़कियों की शादी की उम्र 10 तक बढ़ा दी गई। 1872 ई. में पास हुए एक कानून के द्वारा अन्तर्जातीय और अन्त:साम्प्रदायिक विवाहों को भी सहमति प्रदान कर दी गई। 1891 ई. में पास किए गए एक कानून से बालविवाह को निरुत्साहित किया गया। बाल विवाह रोकने के लिए शारदा एक्ट 1929 ई. में पास किया गया। हज कानून के द्वारा 14 साल से कम उम्र की बालिका और 18 साल से कम उम्र के बालक का विवाह गैर कानूनी है। 20वीं शताब्दी में विशेष रूप से 1919 ई. के बाद भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन समाज सुधार का प्रभुत्व प्रतिपादक बन गया। धीरे धीरे सुधारकों ने प्रचार कार्य भारतीय भाषाओं में प्रारम्भ किया जिससे उनकी आवाज जन-जन तक पहुँच सके। उन्होंने उपन्यासों नाटकों, लघु कथाओं, कविताओं और प्रेस को माध्यम बनाया और 1930 ई. से सिनेमा द्वारा भी उनके विचारों का प्रसार किया गया।

अनेक व्यक्तियों, सुधार समाजों और धार्मिक संगठनों ने महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के लिए, बाल विवाहों को रोकने के लिए, पर्दे से नारियों को बाहर लाने के लिए, एक पत्नी धर्म के निर्वाह के लिए और मध्य वर्ग की महिलाओं को रोजगार करने या सरकारी नौकरी करने के लिए प्रचार हेतु बहुत अधिक परिश्रम किया। इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप भारतीय महिलाओं ने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। फलस्वरूप अनेक अन्ध विश्वास दूर हो गए और कुछ अन्य दूर होने के मार्ग पर ही थे। अब विदेशों में भ्रमण के लिए जाना कोई पाप नहीं समझा जाता।

पाठगत प्रश्न 10.4

1. मुहम्मदन एंग्लो ओरियन्टल महाविद्यालय किसने प्रारम्भ किया?

   .....

2. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय कहां पर स्थित है?

   .....

3. मुस्लिम महिलाओं के विषय में सैयद अहमद खां के क्या विचार थे?

....

4. मुहम्मदन साक्षरता सभा कहाँ स्थित थी?

....

5. पारसियों के किन्हीं सुप्रसिद्ध सामाजिक-धार्मिक सुधारकों के नाम लिखिए।

....

आपने क्या सीखा

- भारत में अंग्रेजी राज्य के प्रभाव से कई सामाजिक और धार्मिक सुधारों का प्रारम्भ हुआ।
- राजा राम मोहन राय आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विस्तार के लिए और कई सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध लगातार संघर्ष करने के लिए और भारतीय जागृति के केन्द्रीय व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं।
- आर जी भण्डारकर और एम. जी. रानाडे ने धार्मिक सुधार का कार्य महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज के माध्यम से अन्तर्जातीय विवाह, पुरोहितों के आधिपत्य से मुक्ति, और महिलाओं के स्तर में सुधार आदि कार्यो द्वारा प्रतिपादित किया।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और व्यक्तियों के वेद पढ़ने के अधिकार पर बल दिया। उन्होंने जनता को पुरोहित वर्ग के अत्याचारों से बचाया। इसी के साथ-साथ इस संस्था ने अस्पृश्यता, जातिवाद और आधुनिक शिक्षा के प्रचार हेतु भी बहुत कार्य किया।
- स्वामी विवेकानन्द एक महान मानवतावादी थे। अपने रामकृष्ण मिशन के द्वारा धार्मिक संकीर्णताओं को तिरस्कृत किया और मुक्त स्वतन्त्र विचारों को प्रोत्साहित करते हुए निधनों की सेवा पर बल दिया। एनी बेसेन्ट के मार्गदर्शन में थियोसोफिकल सोसायटी ने प्राचीन भारतीय धर्मों, दर्शनों और सिद्धान्तों पर बल दिया।
- सैयद अहमद खान ने मुसलमानों में धार्मिक सुधारों का बीड़ा उठाया। आपने मुस्लिम औरतों को आधुनिक शिक्षा स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया, बहुविवाह की निन्दा की, पर्दा व्यवस्था को समाप्त करवाया, और धार्मिक असहिष्णुता, अज्ञान और अप्रासंगिकता के विरुद्ध प्रचार किया।

पाठान्त प्रश्न

1. भारत में सामाजिक सुधारों के अन्तर्गत राजा राममोहन राय की भूमिका का विवेचन कीजिए।

2. सिद्ध कीजिए कि प्रार्थना समाज धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों के लिए प्रयत्नशील था?
3. आर्यसमाज के वेदों में विश्वास को सिद्ध कीजिए।
4. स्पष्ट कीजिए कि रामकृष्ण मिशन ने 19वीं सदी में भारत को जागृत करने के लिए क्या प्रयत्न किए।
5. मुस्लिम सम्प्रदाय की बुराइयों को दूर करने के लिए सैयद अहमद खान ने क्या प्रयत्न किया।
6. ''थियोसोफिकल सोसाइटी का भारतीय समाज में विकास के लिए किए गये योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।'' व्याख्या कीजिए।
7. सिख सुधारकों द्वारा संचालित समाज सुधारों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. समाज में प्रचलित व्यवहार जैसे, सती प्रथा, जातिवाद।
2. मूर्त्ति पूजा का विरोध, यज्ञों के प्रति, आहुतियों के प्रति विरोध, सती प्रथा का बहिष्कार, मानव का स्वाभिमान।
3. अन्तर्जातीय विवाहों, अन्तर्जातीय भोजों, विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं और दलित वर्गो की दशा में सुधार
4. प्रार्थना समाज की विचारधारा के एक दृढ़ अनुयायी।

10.2

1. आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने की।
2. 1886 ई. में लाहौर में
3. मानवता की सेवा मुक्ति का साधन है।
4. नरेन्द्रनाथ दत्त
5. निर्धन और दलित वर्ग की सेवा।

10.3

1. यू. एस. ए
2. एच.पी. बालवत्स्की-एक रशियन, और कर्नल एच. एस. ओलोकोट-एक अमेरिकन

3. चेन्नई के समीप अडयार

4. श्रीमती एनी बेसेन्ट

10.4

1. सैयद अहमद खाँ

2. अलीगढ़

3. पर्दा प्रथा को दूर करना और महिलाओं के लिए शिक्षा

4. 1863 ई. में कलकत्ता में

5. दादाभाई नौरोजी, एस एस बंगाली नौरोजी फरदौनगी।